तेरापंथ : जैन धर्म का पर्याय

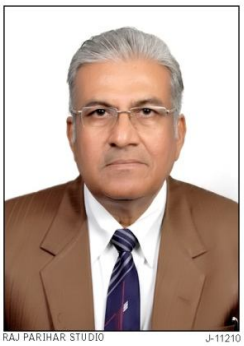

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान
एवं पूर्व संयोजक पारमार्थिक शिक्षण संस्था

जैन धर्म के चार प्रमुख सम्प्रदायों में आज तेरापंथ जैन धर्म के पर्याय के रूप में पहचाना जाता है। आचार्य तुलसी एवं उनके उत्तरवर्ती आचार्यों महाप्रज्ञजी एवं महाश्रमणजी ने अथक परिश्रम से अपनी मौलिकता बनाए रखते हुए तेरापंथ को युगानुकुल बनाकर अध्यात्म, ज्ञान, साधना एवं सामाजिक क्षेत्रों में इसका बहुमुखी विकास किया। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने भी इसमें पूर्ण रूप से अपनी सहभागिता निभाई है। संक्षेप में प्रस्तुती करण की दृष्टि से तेरापंथ के प्रमुख सर्वांगीण विकास के आयाम आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत हैं :

(1) **जैनागमों का संवधर्न** : आचार्य तुलसी–महाप्रज्ञ का युग स्वर्णिम युग था, जो हम सभी ने देखा है। जैन श्वेताम्बर परम्परा में भगवान महावीर की वाणी गणधरों ने आगमों में गूंफित की। ये आगम कुल 32 हैं। प्रायः यह मान्यता रही है कि आगम का पठन–पाठन साधु साध्वियों का कार्य है। लेकिन आचार्य तुलसी की वाचना में आचार्य महाप्रज्ञजी, आचार्य महाश्रमणजी, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी एवं अन्य साधु–साध्वियों ने समस्त 32 मूल आगमों का प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी में सरल भाषा में अनुवाद किया, जिसे सामान्य पाठक भी पढ़े तो आसानी से समझ सकता है। इन आगमों में से करीब 10 आगमों की आगम मंथन प्रतियोगिता भी हो चुकी है, जिसमें 500 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। अतः स्वतः सिद्ध है कि इन महापुरुषों ने जैनागमों का संवर्धन कर आम पाठक के लिए पठनीय बनाकर तेरापंथ को जैन धर्म का पर्याय बनाया।

(2) **पारमार्थिक शिक्षण संस्था का उद्‌भव** : तेरापंथ सम्प्रदाय में वैरागी को सीधी दीक्षा नहीं दी जाती है, उसे 4–5 वर्ष तक पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययन कर शिक्षण, प्रशिक्षण एवं परीक्षण के दौर से गुजरना पड़ता है। आचार्य तुलसी को उनके गुरु से शिक्षा मिली की **"शिक्षा बिना दीक्षा नहीं"** इसी की फलश्रुति करीब 70 वर्ष पूर्व स्थापित यह संस्था है। अभी तक इस संस्था ने करीब 700 मुमुक्षुओं को अध्यात्म की प्रयोगशाला में संस्कारों का निमार्ण कर उन्हें साधु–साध्वी बनाया। यही कारण है कि तेरापंथ के साधु–साध्वियों की ज्ञान, साधना, परिपक्वता की क्वालिटी उत्तम है। आचार्य तुलसी की तेरापंथ को जैन धर्म का पर्याय बनाने में यह एक अभूतपूर्व देन थी।

(3) **समण श्रेणी की स्थापना** : जैन धर्म के साधु–साध्वियों पाद विहारी होते हैं। वे द्रुत गति से स्थान–स्थान पर पहुंच कर जैन धर्म का प्रचार प्रसार नहीं कर सकते हैं। इसको ध्यान में रखकर आचार्य तुलसी ने वर्ष 1980 में

युगानुकुल सर्वांगीण आध्यात्मिक विकास के लिए आंतरिक एवं बाहरी कड़ा विरोध झेलकर समण श्रेणी की स्थापना की, जिनकी दिनचर्या साधु–साध्वियों की तरह ही होती है। लेकिन ये वाहन का उपयोग कर उड़न–दस्ते बनकर देश विदेश में जैन धर्म का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। ये आजीवन दीक्षा में रहते हैं, मात्र अंतर यह है कि ये वाहन का उपयोग कर सकते हैं। इन समणियों में से अनेक विश्वविद्यालय के शिक्षक, प्रोफेसर के रूप में भी पढ़ाते हैं तथा देश–विदेश की यात्रा करते हैं। इनके द्वारा जैन धर्म का आज के युग की मांग के अनुसार प्रचार–प्रसार करने से तेरापंथ जैन धर्म का पर्याय बना।

(4) **प्रेक्षाध्यान–साधना हेतु** : ध्यान साधना जैन धर्म में लुप्त होती जा रही थी। आचार्य तुलसी के निर्देशानुसार आचार्य महाप्रज्ञजी ने जैनागमों का गहन् अध्ययन कर प्रेक्षाध्यान साधना का सन् 1975 में सूत्रपात किया। लाखों साधुओं एवं श्रावकों ने इसका पूरा प्रायोगिक अभ्यास कर शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ एवं महाश्रमण तीनों आचार्यों के अथक परिश्रम से आज प्रेक्षाध्यान पद्धति विश्वविख्यात है। नर्सरी से लगाकर डाक्ट्रेट तक गहन अध्ययन हेतु इसके सभी कोर्स जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में पढ़ाये जाते हैं। इस पद्धति के आविष्कार से तेरापंथ जैन धर्म का पर्याय बना।

(5) **जीवन विज्ञान–भावनात्मक विकास हेतु** : आचार्य तुलसी एवं महाप्रज्ञजी ने महसूस किया कि विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा पद्धति में भावनात्मक पक्ष गायब है। अतः शिक्षा में भावनात्मक पक्ष को जोड़ने हेतु सन् 1978 में इन महान् विभूतियों ने शिक्षा में जीवन विज्ञान का समावेश किया, इससे शिक्षा पद्धति सर्वांगीण बनी। नर्सरी से लगाकर डाक्ट्रेट तक की जीवन विज्ञान की शिक्षा जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में उपलब्ध है। शिक्षा में जीवन विज्ञान के समावेश से विद्यार्थी सम्पूर्ण बनता है। ऐसे मानव कल्याण के प्रकल्प के सूत्रपात से तेरापंथ धर्म का पर्याय बना।

(6) **जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना** : तेरापंथ समाज द्वारा 25 वर्ष पूर्व 1990 में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की गई, जिसमें मुख्य रूप से जैन दर्शन के साथ–साथ अन्य धर्म–दर्शनों, योग, संस्कृत, जैनागम एवं प्राच्य विद्याओं का अध्ययन अत्यन्त ही किफायती फीस पर करवाया जाता है। जैन साधु–साध्वियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। यह विश्वविद्यालय नैतिकता के कारण भारत के गिने–चुने विश्वविद्यालय में ख्यातिप्राप्त है। आज यह माना जाने लगा है कि जैसे विश्व में बौद्ध दर्शन के अध्ययन हेतु सारनाथ (बिहार) जावें, उसी प्रकार विश्व में जैन दर्शन के अध्ययन हेतु लाडनूँ (राजस्थान) इस विश्वविद्यालय में आवें।

तेरापंथ का मिशन है कि **"तेरापंथ की क्या पहिचान, एक गुरु और एक विधान"। "निज पर शासन फिर अनुशासन"।** "अणुव्रत आंदोलन" पिछले 70 वर्षों से देश–विदेश में प्रामाणिकता, नैतिकता, सदाचार, सौहार्द एवं सरलता जैसे माननीय मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु सक्रियता से कार्यरत है। तेरापंथ की व्यवस्था गुरु आज्ञा, अनुशासन, मर्यादा एवं समर्पण पर आधारित होने के कारण यह सम्प्रदाय आज जैन धर्म का पर्याय बन चुका है। आज तेरापंथ का सदस्य अपने आपको जैन तेरापंथी

कहलाने में गर्व की अनुभूति करता है। आइये! इस महान् धर्मसंघ के ज्ञान, ध्यान, साधना, आध्यात्म एवं गुरु आज्ञा सर्वोपरि आयामों का गहराई से अध्ययन कर अपने मानव जीवन को स्वयं के लिए अध्यात्म एवं समाज के लिए मानव सेवा को समर्पित करें। सभी का मंगल हो, ऐसी मनोकमना के साथ।